द्वारा लिखित स्व. डॉ. विजय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:46 - अंतिम अद्यतन गुरुवार, 20 मार्च 2008 14:59

"तेरा वचन सत्य है" यूहन्ना 17:17

संसार के विभिन्न धर्मों की धार्मिक पुस्तकों तथा बाइबिल में अनेक भिन्नता तो है, एक आधारभूत भिन्नता है अन्य धर्म–शास्त्रों में प्रमुखत: नैतिक शिक्षाओं, नीतियों, आध्यात्मिक विचारों और दर्शन का समावेश है, बाइबिल में यह सब तो है किन्तु प्राथमिकता है घटनाओं की, जीवन कथाओं की, उपलब्धियों की, इतिहास की।
बाइबिल का परमेश्वर अपना प्रकाशन करता है, अपने को व्यक्त करता है, अभिव्यक्त करता है, प्रगट करता है; आंशिक रूप से मानव चिंतन द्वारा किन्तु प्रमुखत: दैनिक घटनाओं द्वारा। ध्यानमग्न योगियों द्वारा प्रकाशन उस मात्रा में नहीं जितना समर्पित, कर्मशील, कर्मठ, सक्रिय व्यक्तियों द्वारा। अंतर्दृष्टि हो तो इतिहास मात्र संयोगिक घटनाक्रमों की शृंखला नहीं, ईश्वरीय सक्रियता का महाकाव्य प्रतीत होगा। इतिहास की धाराओं में ईश्वर के अदृश्य हाथ दृष्टिगोचर होंगे।

Revelation के हर stage पर, प्रकाशन के हर स्तर पर, बाइबिल का ईश्वर, सक्रिय है–
अपने कार्यों में अभिव्यक्त है –
वह सतत् सक्रिय है। वह रचनाकार है – जो सृष्टि का निर्माता है। वह राजा है – जो सिंहासन पर विराजमान है। चरवाहा है – जो हरी चराई और शीतल जल के पास ले जाता है। रखवाला है – जो भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है। अगुवा है – जो साथ–साथ चलता है। वह सतत् सक्रिय परमेश्वर है – यीशु ने कहा, मेरा पिता काम करता है। वह रचनेवाला परमेश्वर है जो अपने हाथों रचना करता है। वह अदन की बारी में विचरण करने वाला परमेश्वर है। वह हाबिल के खून की आवाज़ सुनने वाला परमेश्वर है। वह सदोम और अमोरा पर आग और गन्धक बरसाने वाला परमेश्वर है। वह लाल समुद्र को दो भागों में विभाजित करने वाला परमेश्वर है। वह यरीहो की शहरपनाह ध्वस्त करने वाला परमेश्वर है। वह बियाबान में आग और बादल के खम्भे के रूप में अगुवाई करता है।
वह नील नदी में फेंके गए हज़ारों इस्राएली बच्चों की सड़ती लाशों के बीच, मूसा को सुरक्षा देता है।
वह फिरौन के अभिमान को धूल में मिला, इस्राएलियों को स्वतंत्र करता है। वह यूसुफ़ को मृत्यु के गड्ढे से निकालकर राज्य – सिंहासन पर बैठाता है। चरवाहे लड़के दाऊद को राजा बनाने वाला, एलियाह को कौवों द्वारा रोटी देने वाला और यीशु द्वारा मानव उद्धार की योजना को क्रियान्वित करने वाला परमेश्वर है।

न केवल परमेश्वर सक्रिय है – उसके शिष्यों से अपेक्षा है सक्रियता की।
नये नियम में एक मसीही शिष्य के चित्र के अनेक चित्रण हैं। अनेक रंग बिरंगे कैनवास हैं – शिष्य अनेक स्वरूपों में दिखाई देता है। कभी उसका हाथ हल पर है – जो मुड़कर नहीं देखता। कभी वह सैनिक है – जो उद्धार का टोप और आत्मा की तलवार लिये परमेश्वर के सारे हथियार बांध कर खड़ा है।
कभी वह विश्वासयोग्य दास है – जिससे मालिक कह रहा है विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य निकला, मैं तुझे बहुतों पर अधिकारी ठहराऊंगा। कभी वह अनुभवी खिलाड़ी है – जो कहता है – जो बातें पीछे रह गईं उन्हें भूलकर आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ निशाने की ओर दौड़ा जाता हूं।
कभी वह कहता है मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है। कभी पहलवान है – जो कहता है – मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका मैंने विश्वास की रखवाली की है। कभी विजेता है – जो कहता है वह इनाम पाऊंगा जिसके लिए परमेश्वर ने मसीह यीशु में मुझे ऊपर बुलाया है।
कभी राजदूत है – जो कहता है कि सुसमाचार का भेद बताने के लिए मैं जंजीर से जकड़ा हुआ राजदूत हूं। कभी वह मिस्त्री है – जिसे चौकस रहना है कि वह कैसा रद्दा रखता है।

शिष्य के सारे प्रतीक सक्रिय हैं क्रियाशील हैं कार्य में संलग्न व्यक्तियों के हैं। मसीही धर्म स्वयं में विस्मृत, आत्मा और मोक्ष के मात्र

द्वारा लखिति स्□व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:46 - अंतमि अद्यतन गुरुवार, 20 मार्च 2008 14:59

वचिार में लपि्□त धर्म नहीं है□

यीशु action को – कार्य को, धर्म का test मानते हैं – धर्म की कसौटी मानते हैं□ वे कहते हैं ''जो हे प्रभु, हे प्रभु कहता है वह स्□वर्ग के राज्□य में प्रवेश न करेगा परन्□तु वह जो पति‍ा की इच्□छा पर चलता है□'' मात्र भजन और मंत्रोच्□चार से कुछ न होगा – प्रार्थना वंदना बस नहीं□ ईश्□वर की इच्□छा के अनुरूप चलो□
वे कहते हैं बुद्धमिान वह है जो मेरी बातें सुनकर उन्□हें मानता है□ सुनना बस नहीं – अनुसरण आवश्□यक है□ मात्र अनुसरण की भावना बस नहीं – अनुसरण करना है□ नर्क का रास्□ता सुइच्□छा के फलों से जुड़ा हुआ है – मात्र सुइच्□छा पर्याप्□त नहीं – मत्□ती 21:28–31 में यीशु ने दृष्□टांत कहा और प्रश्□न पूछा –
कसिी मनुष्□य के दो पुत्र थे□ उसने पहले से कहा – ''हे पुत्र आज खेत में काम कर'' उसने उत्□तर तो दयिा मैं नहीं जाऊंगा पर फरि पछता कर गया और काम कयिा□ दूसरे से भी पति‍ा ने यही कहा – उसने कहा, जी पति‍ाजी जाता हूं परन्□तु नहीं गया – यीशु ने पूछा, इन दोनों में से कसिने पति‍ा की इच्□छा पूरी की?
जवाब मलिा – 'पहले पुत्र ने, जसिने कहा, नहीं जाता पर गया और काम को कयिा'□ मात्र सुइच्□छा करना पर्याप्□त नहीं, पति‍ा की आज्ञा मानना आवश्□यक है□

यीशु भी कर्मठ व्□यक्त‍ि थे□ जब संलग्□न थे काम में तो कोई शक्त‍ि रोक नहीं सकी, पति‍ा की इच्□छा पूरी करना थी□
''मैं □क आग लगाने आया हूं□ काश कि अभी सुलग जाती''
''मुझे □क बपतस्□मा लेना है – जब तक हो न जा□ तब तक कैसी परेशानी में रहूंगा□''

□क प्रसंग है – यीशु के शष्ि□य सूचना देते हैं, सम्राट हेरोदेस आपको मार डालना चाहता है□ यीशु कहते हैं – ''जाकर उस लोमड़ी से कह दे, मुझे आज और कल और परसों चलना अवश्□य है□''
दूसरा प्रसंग है – क्रूस की ओर जीवन अग्रसर है, पति‍ा की इच्□छा है, पूरा करना है□ पतरस रोकता है, 'प्रभु यह नहीं हो सकता कि तू क्रूस पर चढ़ाया जा□, ईश्□वर न करे, ऐसा हो'□ यीशु कहते हैं – 'हे शैतान मेरे सामने से दूर हो, तू मेरे लि□ ठोकर का कारण है□ तू मनुष्□यों की बातों पर मन लगाता है□ मुझे पति‍ा की इच्□छा को पूरा करना है'□
पर याद रखि□ ये सस्□ता सुसमाचार नहीं कि अच्□छा करो तो मोक्ष मलिेगा□ कार्य – जो उत्□पन्□न हों ईश्□वर में वशि्□वास से – जो वकिसति हों – कृतज्ञता से, प्रेम से जो पापों की क्षमा के अनुभव से उपजते हैं□ जो परविर्तति जीवन का परणिाम हों□
कसिी ने कहा है –
तीन प्रकार के लोग होते हैं –
पहले, जो कार्य करते हैं दूसरे जो कार्य होते हु□ देखते हैं –
और तीसरे जनि्□हें मालूम नहीं क्□या हो गया है□ मसीही जगत में – वकिास अवरूद्ध है□ व्□यक्त‍िगत जीवन में वकिास अवरूद्ध है□ □क क्रयिा–हीनता है□ □क यथा–स्थति‍ि वाद सड़ाहट पैदा करता है – प्रगत‍ि होती नहीं – क्रांत‍ि होती नहीं –
खंडहर अवश्□य तैयार होते हैं –
खंडहरों को देख हम अपने अतीत के गौरव गीत गा–गा कर संतुष्□ट हैं□
याद रखें – वशि्□वास, नरि्माण, सक्रयिता, गतशिीलता, कर्मठता, मसीही चरति्र के अंग हैं□ यह आवश्□यक है कि न केवल जानें, वशि्□वास करें, नई सृष्ट‍ि के अंग बनें पर आगे चलें□ उत्□पत्त‍ि हो गई, आगे बढ़ना है, अब नरि्गमन करना है□
गमन करना है –
कार्य करना है –
कार्य, आत्□मा का प्रकाशन करता है –
जीने की शैली, नयित‍ि का नरि्णय करती है□

द्वारा लखिति स्□ व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:46 - अंतमि अद्यतन गुरुवार, 20 मार्च 2008 14:59